OM 15_Page 1 and 2 13-10-2014 17:01 Page 8

कथा सरिता

विकास के सूत्र

एक व्यक्ति जंगल में लकड़ी तोड़ने गया। एक पेड़ पर उसको रेशम के तितली का कुकून दिखा। कुकून के ऊपरी भाग में एक छिद्र दिख रहा था। वह कई घंटे बैठे देखता रहा तो पाया कि कुकून में मौजूद रेशम की तितली की उम्र कुछ ही घंटे है और वह उस छेद से बाहर आने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। कुछ देर बाद उसने प्रयत्न करना छोड़ दिया, उस व्यक्ति ने अनुमान लगाया कि तितली ने जहाँ तक हो सका दम लगाया और अंत में हार मानकर बैठ गई। उसने तितली की मदद करने की सोची। जेब से चाकू निकालकर उसने शेष कुकून को काट फेंका। वह तितली बाहर आयी तो उसने पाया कि तितली का शरीर बेडौल है और उसके पंख भी छोटे और कमज़ोर हैं।

वह आदमी अब उस तितली की ओर ध्यान से इस आशा से देखने लगा कि कब वह अपने पंख खोलेगी और उनके सहारे स्वच्छंदता से उड़ सकेगी, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। वह तितली उड़ ही न सकी। शाम ढ़लने को आई लेकिन तितली असहाय ढ़ंग से रेंगने के सिवा कुछ नहीं कर सकी। वह अधबने पंखों के सहारे कुछ दूरी तक अपने को धकेल पाती। उस व्यक्ति ने दया वश जल्दबाज़ी की। वह यह समझ न सका कि कुकून व उसके छेद से निकलने के दौरान का संघर्ष तितली के पंख को मजबूत बनाने का प्रकृति का तरीका है। इस परेशानी और संघर्ष के जरिये ही तितली के शरीर में स्थित द्रव्य उसके पंखों की जड़ों तक पहुँचता है, जिसके कारण कुकून से मुक्त होने पर तितली को उड़ने की शक्ति मिलती है। उस व्यक्ति को प्रकृति में व्याप्त चेतना के प्रत्यक्ष अनुभव के साथ ही अपनी गलती का भी अहसास हुआ। मनुष्य जीवन भी इसी प्रकार का है। इसके संघर्ष और परेशानियां अर्थहीन नहीं हैं। हर विपरीत प्रतीत होने वाली घटना के पीछे का हेतु हमारा उत्कर्ष ही होता है। अज्ञानता के कारण हम दूरदर्शिता से घटनाओं को समझ नहीं पाते।

तर्क से परे ईश्वरीय शक्ति

एक मैदान में महात्मा प्रवचन दे रहे थे। वे कह रहे थे कि भगवान मनुष्य को मार्गदर्शन देने के लिए पृथ्वी पर अवतार लेते हैं। बीच में ही एक युवक ने हाथ ऊपर किया और खड़े होकर बोला-मुझे इस बात पर भरोसा नहीं होता कि परमेश्वर जो सर्वशक्तिमान है, वह मानव के रूप में पृथ्वी पर जन्म लेता है। महात्मा ने जवाब दिया-भाई, भगवान सब कुछ कर सकते हैं, फिर उनकी लीला उनकी कृपा से ही समझ में आती है। युवक थोड़ी देर महात्मा की बात पर विचार कर घर लौट आया और अपने कामों में लग गया। शाम ढ़ल चुकी थी और मौसम बिगड़ने लगा। बारिश, आंधी और तूफान का माहौल बनने लगा। तभी युवक ने खिड़की से देखा कि कुछ हंसों का दल उसके आंगन में उतरा है। बरसात और आंधी में अप्रत्याशित मेहमानों को देखकर वह चिंतित हो उठा। सोचा इन्हें जल्द ही गैरेज में नहीं किया तो ये तूफान में मारे जायेंगे। वह नीचे उतरा, गैराज का दरवाजा खोला और उन्हें भीतर करने का प्रयत्न करने लगा। घबराए हंस इधर-उधर भाग रहे थे। युवक रोटी लाया और उन्हें खाने का लालच भी दिया लेकिन कोई असर नहीं पड़ा। कुछ सोचकर युवक दौड़कर अपने कमरे में गया और सफेद चादर लपेटी, माथे पर कपड़े और कार्डबोर्ड की मदद से हंस जैसा सिर बनाया व इस भेष में नीचे उतरा। कुछ देर बाहर खड़ा रहा और फिर गैरेज की ओर बढ़ा। एक-एक कर हंस उसके पीछे गैरेज में घुस गए। इस प्रकार हंसों को सुरक्षित पहुँचाने के बाद यकायक युवक के ज़हन में महात्मा के प्रवचन की बात याद आई की मानव को बचाने के लिए भगवान पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। हंसों को बचाने के लिए स्वयं के प्रयत्नों से उसे भगवान के अवतरण का रहस्य प्रत्यक्ष समझ में आ गया था। शायद इसीलिए कहा जाता है कि परमेश्वर के कार्य तर्क एवं विचार की पकड़ से परे होते हैं। उसे समझने के लिए प्रज्ञा की आवश्यकता होती है।

भाव दूषित हों तो साधना बेकार

एक संत के शुद्ध भक्तिमय जीवन की बड़ी ख्याति थी। वे प्रतिदिन नियमित जप-ध्यान करते, मंदिर में दर्शन करने जाते। एक दिन उन्हें स्वप्न आया। उन्होंने देखा कि उनकी मृत्यु हो चुकी है और वे एक देवदूत के सामने खड़े हैं। देवदूत सब मृत लोगों से उनके किए शुभ-अशुभ कर्मों का ब्यौरा मांग रहा है। काफी देर बाद जब उनकी बारी आई, तो उसने पूछा-आप बताएं आपने जीवन में क्या अच्छे कार्य किये, जिनका आपको पुण्य मिला हो? संत सोच में पड़ गए, मेरा तो सारा जीवन ही पुण्य कार्यों में व्यतीत हुआ है, मैं कौन सा एक काम बताऊँ। फिर बोले-मैं पाँच बार देश की तीर्थयात्रा कर चुका हूँ। देवदूत बोला-आपने तीर्थयात्राएं तो कीं, लेकिन आप अपने इस कार्य का जिक्र हर व्यक्ति से करते रहे। इसके कारण आपके सारे पुण्य नष्ट हो गए। इसके सिवा आपने कोई पुण्य का कार्य किया हो तो बताएं?

संत को भारी ग्लानि हुई। कुछ हिम्मत कर उन्होंने कहा-मैं प्रतिदिन भगवान का ध्यान और उनके नाम का स्मरण करता था। देवदूत ने कहा-जब आप ध्यान करते और कोई दूसरा व्यक्ति वहाँ आता तो आप कुछ अधिक समय तक जप-तप-ध्यान में बैठते। अब संत का हृदय कांप गया। उन्हें लगा कि उनकी अब तक की सारी तपस्या बेकार चली गई। देवदूत ने कहा-अब आप कोई और पुण्य का कर्म बताएं? संत को कोई ऐसा कार्य याद नहीं आया। उनकी आँखों में पश्चाताप के आँसू आ गए। इतने में उनकी नींद खुल गई। स्वप्न की घटना से उन्हें अपने मन की छिपी कमजोरियों को परखने का मौका मिला। उन्होंने उसी दिन से सबसे मिलना-जुलना, प्रवचन आदि छोड़ दिए और एकनिष्ठ भाव से साधना में जुट गए। धर्म और अध्यात्म स्तर पर किये गए कर्म भी कई बार प्रदर्शन, नाम और यश आदि सांसारिक कामनाओं से उलझे होते हैं। यदि इनके प्रति सचेष्ट न रहा जाए, तो ये हमारी प्रगति को रोक सकते हैं।

घटनाओं को बेवजह महत्व न दें

मिथिला नरेश जनक ने एक रात स्वप्न में देखा कि किसी राजा ने उनके राज्य पर आक्रमण कर दिया और उन्हें पराजित कर राज्य से निकाल दिया। मात्र कमर पर एक कपड़ा पहने जनक को मिथिला की सीमा से बाहर कर दिया गया। अन्न की तलाश में घूमते-घूमते वे एक अन्नक्षेत्र पहुँचे। वहाँ के सेवक को एक भूखे आदमी को देख दया आ गई। भोजनशाला में जाकर देखा तो वहाँ खिचड़ी समाप्त हो चुकी थी, तभी उन्हें बर्तन में खुरचन लगी दिखी, लेकिन वह भी जल गई थी। जनक को वह खुरचन ही वरदान के समान लगी। वे उसे लेकर ज्यों ही खाने को हुए, एक चील ने झपट्टा मारा और खुरचन जमीन पर गिर पड़ी। चील के पंजे के घाव के दर्द और भूख से व्यथित जनक चिल्ला पड़े और इतने में ही उनकी नींद खुल गई। जागने के बाद वे गहन विचार में पड़ गए। उनका प्रश्न यही था कि वर्तमान की अवस्था सच है या जो उन्होंने स्वप्न देखा था वह सत्य है? मंत्री, वैद्य व ज्योतिषी कोई भी राजा को संतुष्ट नहीं कर सका। ऋषि अष्टावक्र मिथिला में आये थे। जनक से मिलने वे सभा में पहुँचे, तो राजा ने उनसे भी प्रश्न किया-यह सच है या वह? अष्टावक्र ने ध्यान कर सारी स्थिति को जान लिया। वे महाराज से बोले-स्वप्न में भूख का अनुभव हो रहा था, तब क्या आप वहाँ थे? राजा ने उत्तर दिया-तब मैं वहीं पर था। अगला प्रश्न था-अभी आप कहाँ पर हैं? राजा ने कहा-इस समय मैं आपके सामने राजभवन में उपस्थित हूँ। अष्टावक्र ने कहा-राजन, न तो आपकी स्वप्न की अवस्था सही कही जा सकती है, न यह जागृति की या सुषुप्ति की। सत्य तो वह दृष्टा है जो स्वप्न, जागृति और गहरी निद्रा की बदलने वाली अवस्थाओं का साक्षी होता है। इस सत्य में जीवन का फलसफा छिपा है। यदि हम घटनाओं को बेवजह महत्व न दें और अपना चिंतन आत्मतत्व पर रखें तो हमारा जीवन आनंद से भर जायेगा।

मऊ-रानीपुर। प्रान्तीय मेला जलविहार के अवसर पर 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए एस.डी.एम. अमित कुमार, चेयरमैन हरीशचन्द्र आर्य, गुड्डू भाई,प्रधान मऊ देहात, ब्र.कु. शैलजा, ब्र.कु. चित्रा, तथा ब्र.कु. मंजू।

भुज-गुज.। रीक्रियेशन क्लब,जी.एस.ई.सी.एल. और महिला मंडल द्वारा आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए पावर स्टेशन के चीफ एच.आई. देसाई, क्लब के सदस्य, महिला मंडल के सभासद, ब्र.कु. रक्षा तथा अन्य।

शाहगंज-छत्तरपुर(म.प्र.)। स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत उपस्थित हैं ब्र.कु. दीपा, ब्र.कु. द्रौपदी, नगरपालिका अध्यक्षा चंदा खटीक तथा अन्य।

गोलपारा। पुलिस अधीक्षक नितुल गोगोई को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. भवानी।

गुवाहाटी-उलुबाड़ी। चैतन्य दुर्गा की झाँकी का उद्घाटन करते हुए विधायक रॉबिन बोर्दोलोई, मेयर अबीर पात्रा तथा ब्र.कु. शीला।

इन्दौर-कालानी नगर। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में विधायक सुदर्शन गुप्ता, पार्षद गोपाल मालू, ब्र.कु. जयन्ती तथा अन्य।

मैसूर। 51 फीट लम्बे व 23 फीट चौड़े पतंग के माध्यम से आध्यात्मिक संदेश दिये जाने को वर्ल्ड अमेजिंग रिकॉर्डस में शामिल करके वर्ल्ड अमेजिंग रिकॉर्डस के प्रेज़ीडेंट पवन सोलंकी ब्र.कु. लक्ष्मी व ब्र.कु. दीपक को प्रमाण पत्र भेंट करते हुए।